

डॉ. ऑगस्ट कोकेल, नीतिवचन, सत्र 13

© 2024 अगस्त कोकेल और टेड हिल्डेब्रांट

यह नीतिवचन की पुस्तक पर अपने शिक्षण में डॉ. ऑगस्ट कोकेल हैं। यह सत्र संख्या 13 है, ईश्वर के साथ जीवन, नीतिवचन 16:1-22:16।

नीतिवचन पर एक सत्र में आपका स्वागत है। नीतिवचन व्याख्याओं की हमारी श्रृंखला में, हम उस संग्रह तक पहुंचे हैं जिसका श्रेय अध्याय 10 से शुरू होकर सुलैमान को दिया जाता है।

हमने पहले अध्याय 10-15 के रूपांकनों के बारे में सोचने में कुछ समय बिताया है, जिनमें एक खास तरह की साहित्यिक शैली है। अब हम उस संग्रह के दूसरे भाग की ओर बढ़ना चाहते हैं, जो अध्याय 16:1 में पाया जाता है, जब तक कि हम 22:16 में बुद्धिमानों के शब्दों तक नहीं पहुँच जाते। यहां, हमारे पास विषयों से संबंधित कुछ अधिक संग्रह हैं। मैं यहां जो करने जा रहा हूँ वह सिर्फ नीतिवचन 16 को देखना है, लेकिन हम नीतिवचन 16 के भीतर कुछ वर्गों के सामंजस्य और उनके द्वारा एक विशेष विषय पर लाए गए अवलोकनों को देखने जा रहे हैं।

पहला उस तरीके के बारे में है जिसमें ईश्वर हमारे जीवन को जानता है और ईश्वर हमें उससे बेहतर जानता है जितना हम स्वयं को जानते हैं। इनमें से कुछ कहावतें मुझे सचमुच बहुत पसंद हैं। पहले वाले से शुरुआत करते हुए, यह मेरे लिए बिल्कुल लागू है।

व्यक्ति अपने विचारों को व्यवस्थित करता है। इसे रखने का यह एक तरीका है। आप जानते हैं, मैंने यह सोचने में बहुत समय बिताया है कि मैं कैसे कुछ कहना चाहता हूँ।

कभी-कभी मैं शायद यह सोचने में पर्याप्त समय नहीं बिता पाता कि मैं कुछ कैसे कहना चाहता हूँ। परन्तु आयत का दूसरा भाग है, परन्तु जीभ का उत्तर तो प्रभु ही देता है। यह बहुत दिलचस्प है क्योंकि इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि मैं अपने विचारों को व्यवस्थित करने में कितना समय बिताता हूँ कि मैं कुछ कैसे कहने जा रहा हूँ और मुझे लगता है कि यह कितना स्पष्ट है, कोई और जो सुनता है वह वह नहीं है जो मैं चाहता था।

या अक्सर कोई और जो सुनता है वह वह नहीं होता जो मेरा इरादा था। और कभी-कभी इसे बहुत गलत समझा जाता है। और इसलिए, यह कहावत एक तरह से याद दिलाती है कि जिन चीजों के बारे में हम सोचते हैं कि वास्तव में हमारा नियंत्रण है, उनके लिए भी हमें प्रार्थना करनी चाहिए।

क्योंकि एक और गतिशीलता चल रही है। इसे माध्यम और श्रोता कहा जाता है। वह हमारे नियंत्रण में नहीं है।

और हम इन सभी चीजों पर भगवान का आशीर्वाद चाहते हैं। इसलिए, जब आप अपनी सारी सोच-विचार कर लें और आपको लगे कि सब कुछ बिल्कुल स्पष्ट है, तो सुनिश्चित करें कि आप भगवान से इसे सही तरीके से काम करने के लिए कहें। यह उस कहावत का सार है।

ठीक है, हम इनमें से हर एक कहावत पर इतना समय खर्च नहीं कर सकते हैं, लेकिन मैं आपको यहां कुछ बातें बताऊंगा जो ये कहावतें कहती हैं और आप अपने अनुवाद के शब्दों के आधार पर उन पर विचार कर सकते हैं। लेकिन दूसरी कविता बिल्कुल सच है। मैं कुछ क्यों करूँ? उदाहरण के लिए, मैं कैसे क्यों दूँ? मुझे खुद से यह सवाल बहुत गंभीरता से पूछना होगा।

क्योंकि स्पष्ट रूप से, मैं कुछ भी क्यों करता हूँ इसका केवल एक ही कारण नहीं होता। और मुझे जो याद रखना है वह यह है कि कुछ ऐसे कारण भी हैं जिनके बारे में मैं नहीं जानता, भगवान उनके बारे में जानते हैं। इसलिए, मुझे विनम्र होने की जरूरत है।

और यहां तक कि जब मुझे लगता है कि मैं वास्तव में अच्छे काम कर रहा हूँ, तो मुझे विनम्र होने की जरूरत है और यह महसूस करना होगा कि मैं खुद को उतना अच्छी तरह से नहीं जानता जितना मुझे जानना चाहिए। श्लोक तीन. मैंने किसानों को हर समय मुझसे यह कहते हुए सुना है, क्योंकि किसान वास्तव में यह जानते हैं।

आप खेती के बारे में सब कुछ जान सकते हैं और आपको अपनी फसल कैसे लगानी चाहिए, और जो चीजें आपके नियंत्रण से पूरी तरह बाहर हैं, उनके कारण आपकी फसल पूरी तरह बर्बाद हो सकती है। तुम्हें भगवान पर भरोसा करना होगा। इसलिए, अपने सभी कार्यों में प्रभु पर भरोसा रखें, और वह आपकी योजनाओं को पूरा करेगा।

अपनी योजनाएं बनाएं, लेकिन याद रखें कि उन योजनाओं पर आपका नियंत्रण नहीं है, और जो योजनाएं आपके पास हैं उन्हें पूरा करने के लिए आपको भगवान पर भरोसा करना होगा। आप जानते हैं, यह श्लोक कई लोगों के लिए थोड़ा उलझन भरा है। प्रभु के प्रत्येक कार्य का अपना उद्देश्य होता है, यहाँ तक कि संकट के दिन के लिए दुष्टों का भी।

अब, यह श्लोक यह कहने के लिए नहीं है, ओह, इसलिए भगवान दुष्टता की योजना बनाते हैं क्योंकि इसमें कोई उद्देश्य है। नहीं, यह श्लोक वह नहीं कहना चाह रहा है। यह श्लोक जो कहना चाह रहा है वह यह है कि ब्रह्मांड के लिए एक नैतिक व्यवस्था है, और ईश्वर जो कर रहा है वह ब्रह्मांड के भीतर होने वाली सभी चीजों को ले रहा है और उन्हें अंत तक और उस इरादे तक पहुंचा रहा है जो उन्हें होना चाहिए।

मुझे लगता है कि उपदेशक अध्याय तीन में बिल्कुल यही बात कहता है। एक समय है, जन्म लेने का एक समय, मरने का एक समय, पत्थर फेंकने का एक समय, पत्थर इकट्ठा करने का एक समय। उनके कुछ रूपक बहुत स्पष्ट हैं।

बोने का समय और फाड़ने का भी समय है। दूसरे शब्दों में, ये सभी चीजें होती हैं, और फिर उपदेशक यह निष्कर्ष निकालता है, भगवान ने पूरी दुनिया की इच्छाओं को हमारे मन में डाल दिया है, लेकिन हम वास्तव में यह नहीं समझते हैं कि ये सब चीजें क्यों होती हैं। और यह कहावत यही कह रही है, कि भगवान का उद्देश्य पूरा होने वाला है, और इसमें वे चीजें शामिल हैं जो हमें पसंद नहीं हैं और जो चीजें हमें दर्दनाक लगती हैं।

खैर, घमंड एक घृणित चीज़ है जिसकी कीमत चुकानी पड़ेगी। दया, और यह मेरे लिए बहुत महत्वपूर्ण है। हमने दया की भावना खो दी है, खासकर एक उदार समाज में।

हमने दया की भावना खो दी है। उदारवादियों को क्षमा के बारे में कुछ भी पता नहीं है। वे दया के बारे में कुछ नहीं जानते।

और निःसंदेह, जब वे किसी को गलत पकड़ते हैं या उनमें से किसी एक को भी गलत पकड़ते हैं, तो वे उसे बाहर निकाल देते हैं, उसे दंडित करते हैं, जो कुछ भी वे सोचते हैं कि उन्हें करने की आवश्यकता है वह करते हैं। नहीं, दया के लिए जगह होनी चाहिए। हम दया से जीते हैं, और प्रभु का भय जो गलत है उससे बचने की कोशिश करना है।

प्रभु की कृपा शांति पैदा करती है, और कभी-कभी थोड़ा भी बहुत होता है। यदि निष्पक्षता और न्याय है, तो थोड़ा बहुत है। सरकार के अधीन जीवन।

अब, निःसंदेह, सरकार एक ऐसी चीज़ है जो आवश्यक है। बाइबल में सरकार के साथ थोड़ा प्रेम-घृणा का रिश्ता है। यह आवश्यक है क्योंकि, जैसा कि हम बाढ़ की कहानी से सीखते हैं, यदि कोई सरकार नहीं है, तो हम पूरी तरह से आत्म-विनाश के रास्ते पर चले जाते हैं।

हम लेमेक की तरह हैं। यदि कैन का सात बार बदला लिया गया, तो लेमेक का सात सत्तर बार बदला लिया जाएगा। हमें किसी प्रकार के नियंत्रण प्राधिकार की आवश्यकता है, और फिर भी शास्त्रों में, सरकार अक्सर राक्षस होती है।

सरकार सभी मानव अपराधियों में सबसे खराब है। तो, यह सरकार पर एक संपूर्ण खंड है जो कह रहा है कि आप जानते हैं, आपको राजा जो कहते हैं उसका सम्मान करना होगा, चाहे आप इसे पसंद करें या नहीं। आप इसे आसानी से नकार नहीं सकते, कि न्याय और ईमानदारी, अंततः, वास्तव में ईश्वर का कार्य है।

यह ऐसी चीज़ नहीं है जिसे मनुष्य स्वयं प्राप्त करने में सक्षम हो। और कुछ व्यावहारिक बातें। अच्छी सरकार के लिए अच्छे लोगों की आवश्यकता होती है।

अच्छी सरकार अच्छे लोगों का पक्ष लेती है। बुद्धिमान लोग शत्रुता को सुलझा लेते हैं। सरकार का एहसान, और यह मुझे भजन 72 की बहुत याद दिलाता है, एक हल्की बारिश की तरह है।

और इस प्रकार भजन 72 में सुलैमान की वर्षा को समझा जाता है, जो आरंभ में राजाओं में वर्णित है। बुद्धिमानी से जीने के गुण. सीधी सड़क ही सुरक्षित सड़क है।

पतन से पहले अभिमान आता है. गरीबों के साथ विनम्रता को अधिक प्राथमिकता दी जाती है। स्पष्ट सोच का प्रतिफल, और यहाँ हमारे पास, क्षमा करें, छंदों की एक पूरी श्रृंखला है।

जो विवेक से काम करेगा वह समृद्ध होगा। विवेक जीवन का कुआँ है। बुद्धि वाणी को सूचित करती है।

अच्छी तरह से चुने गए शब्द उपचार लाते हैं। हमारे पास वह मूल भाव पहले भी था। मानवीय ज्ञान सही प्रतीत हो सकता है, लेकिन यह घातक रूप से गलत है।

इस कविता को कई बार चुना गया और उद्धृत किया गया, लेकिन ऐसा होना चाहिए। यह अध्याय 16 का श्लोक 25 है। एक ऐसा मार्ग है जो मनुष्य को सही लगता है, लेकिन उसकी नियति मृत्यु का मार्ग है।

आप जानते हैं, जो सही है उसके बारे में हमारे अपने विचार अक्सर हमें सही दिशा में नहीं ले जाते हैं। और यहां एक और बात है जिस पर हम वापस आएं जब हम अपने आखिरी सत्र में काम के बारे में बात करेंगे, लेकिन काम आपका सबसे बड़ा दुश्मन हो सकता है। और मैंने इसका वर्णन इस प्रकार सुना है।

जब काम पूरा हो जाता है क्योंकि हमें अपना काम पसंद आता है तो यह अच्छी बात है। लेकिन जब काम केवल इसलिए किया जाता है ताकि हम अपनी इच्छाओं को पूरा कर सकें, तो काम अत्याचारी हो जाता है क्योंकि हमारी जो इच्छाएं होती हैं वे कभी पूरी नहीं होतीं। और इसलिए यह कहावत यही कहती है।

कार्यकर्ता की इच्छा ही उसे कार्य करने के लिए बाध्य करती है। और उसकी चाहत उसे लगातार इस ओर ले जाती है। हम उन्हें वर्कहोलिक्स कहते हैं।

इसलिए नहीं कि उन्हें अपना काम पसंद है, नहीं। क्योंकि वे किसी ऐसी चीज़ के लिए काम कर रहे हैं जो वे चाहते हैं, और उनकी इच्छाएँ कभी पूरी नहीं होतीं। एक बहुत ही महत्वपूर्ण कहावत.

बुराई से, बुरे लोगों की योजनाओं से बचना। जिन चीज़ों को महत्व देने की जरूरत है। मैं यहां श्लोक 31 पर आता हूँ।

नेकी की राह में सफ़ेद बाल पाए जाते हैं। हमारे समाज में अक्सर उम्र बढ़ने को लेकर यह उपेक्षा देखी जाती है। हम बूढ़ों की श्रेणी में नहीं रहना चाहते.

दरअसल, मेरी उम्र और मैं बूढ़ा हो चुका हूँ। मेरे आयु वर्ग में, हमें ज़ूमर्स कहा जाता है। आप जानते हैं, मुझे यह बिल्कुल अनुचित लगता है क्योंकि मैं कहीं भी ज़ूम नहीं करता, और न ही मैं किसी अन्य, मेरी उम्र के लोगों को, कहीं भी ज़ूम करते हुए देखता हूँ।

वे रेंगते हुए आगे बढ़ रहे हैं। वे बस यही कर रहे हैं। और ज़ूमिंग उनके दिमाग में हो सकती है, लेकिन अगर वे अपने दिमाग से बाहर ज़ूम करते हैं, तो वे वास्तव में परेशानी में पड़ जाते हैं।

बुढ़ापा अच्छी बात है। सफ़ेद बाल एक अच्छी बात है क्योंकि इसे उस जीवन को प्रतिबिंबित करना चाहिए जो धार्मिकता के बारे में बहुत कुछ समझता है। धैर्य शक्ति से बेहतर है।

नियंत्रित क्रोध शहर पर कब्ज़ा कर लेता है। धैर्य ही शक्ति है। यह सभी शक्तियों में सबसे महान है, और धैर्य अन्य प्रकार की शक्तियों की तुलना में बहुत बेहतर है जो केवल जबरदस्ती करना चाहती हैं।

निःसंदेह, अंत में प्रभु की इच्छा ही निर्णायक होगी। तो, ये कुछ प्रकार के क्षेत्र और जीवन के बारे में कुछ विचार हैं जो हमारे पास सोलोमन की नीतिवचन के इस बहुत ही प्रेरक संग्रह में हैं।

यह नीतिवचन की पुस्तक पर अपने शिक्षण में डॉ. ऑगस्ट कोकिल हैं। यह सत्र संख्या 13 है, ईश्वर के साथ जीवन, नीतिवचन 16:1-22:16।